15

समझ से बाहर की शांति

(फिलिप्पियों 4:4-7)

हमारा परेशान संसार शांति को तरसता है। युद्ध से पीड़ित देशों में रहने वाले लोग अपने आस पास होने वाली मृत्यु और विनाश को देखते हैं तो शांति की पुकार करते हैं। कुछ लोग झगड़े के कारण फूट पड़े देशों, पड़ोसियों या परिवारों में रहते हैं और वे बुरी तरह से शांति को तरसते हैं। अन्य लोग शांत माहौल में रहते हैं पर उनके मनों में झगड़ा और निराशा भरी रहती है जिस कारण वे मन की शांति को तरसते हैं।[1]

प्रभु चाहता है कि हमें शांति मिले। यीशु के जन्म का संदेश था कि ''आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो'' (लूका 2:14)। अपनी मृत्यु से पहले अपने चेलों के साथ अन्तिम घड़ियों में मसीह ने उन्हें बताया था:

> मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे (यूहन्ना 14:27)।
>
> मैं ने ये बातें तुम से इसलिए कही हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले; संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीत लिया है (यूहन्ना 16:33)।

हमें शांति क्यों नहीं है? कम से कम दो रुकावटें पाई जाती हैं। पहली यह कि अधिकतर लोगों को समझ ही नहीं है कि वास्तविक शांति है क्या। शांति की उनकी अवधारणा आम तौर पर शांत माहौल या झगड़े के न होने से मिला दी जाती है। दूसरा, अधिकतर लोगों को यह समझ नहीं है कि असली, पूरी तरह से संतुष्ट करने वाली और सदा तक रहने वाली शांति केवल प्रभु से ही मिलती है।

इस और अगले अध्ययन के लिए वचन पाठ में पौलुस ने फुर्ती से एक के बाद एक, अपने पाठकों को अन्तिम निर्देश दिए (देखें 4:8)। फिलिप्पियों 4:4-9 में बाइबल की सबसे अधिक ऊपर उठाने वाली आयतों में से कुछ हैं। मुख्य विषय शांति ही है: ''तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ के बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी'' (4:7); ''तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा'' (4:9ख)। वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे ने फिलिप्पियों 4 अध्याय को ''नये नियम का 'शांति का अध्याय' '' नाम दिया है।[2] इस पाठ में हम 4 से 7 आयतों पर ध्यान लगाएंगे। अगले पाठ में 8 और 9 आयतों को देखा जाएगा।

प्रभु में आनन्दित होना (4:4)

पौलुस ने इन शब्दों के साथ आरम्भ किया: *''प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो''* (आयत 4)! प्रेरित आनन्दित होने के बार-बार आने वाले विषय पर वापस

आया (1:18; 2:17, 18, 28, 29; 3:1), परन्तु यहां उसने पहले से भी अधिक ज़ोर दिया: ''प्रभु में *सदा* आनन्दित रहो'' (आयत 4क)। मूल धर्मशास्त्र में वर्तमान काल का इस्तेमाल किया गया है। एक मूल अनुवाद होगा ''प्रभु में आनन्दित करते *रहो–सदैव!*'' मैं इस अदला बदली की कल्पना कर सकता हूं:

''तब भी जब तुम कैद में हो और जैसा तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार हो रहा है, ऐसे ही आनन्दित रहो?''

''हां!''

''तब भी जब सताए जाते हो हो और तुम्हें गालियां दी जाती हों?''

''हां!''

पौलुस ने ऐसी विपत्तियों का अनुमान लगा लिया होगा इसलिए उसने अपनी ताड़ना को दोहराया: ''मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो!'' (आयत 4ख)। अन्य शब्दों में, ''चाहे जो भी जो जाए, तुम आनन्दित रहो!''

यह कैसे हो सकता है? एक बार फिर, दो शब्दों को नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए: ''प्रभु में।'' हम ''जीवन की परिस्थितियों में'' हर बात में आनन्दित नहीं हो सकते,[3] ''पर प्रभु में'' हम आनन्दित हो सकते हैं। हमें ''मसीह में बपतिस्मा'' दिया गया है और अब ''मसीह में'' हमें इतना कुछ मिला है कि हम उसके लिए धन्यवाद दें (रोमियों 6:3, 4; गलातियों 3:26, 27; इफिसियों 1:3)! ट्रुमन स्प्रिंग ने उसे आनन्दित करने वाली आशिषों के नाम गिनाए हैं:[4]

- वह उद्धार जो उसने मेरे पाप धो डालने के समय उसने मुझे दिया।
- सच्चाई की जीत का आश्वासन।
- संगति जो वह मुझे देता है (1 यूहन्ना 1:7, 8)।
- आशा जो वह मुझे में भरता है।
- वह तथ्य कि मेरा नाम स्वर्ग में लिखा गया है।
- यह ज्ञान कि परमेश्वर मेरा पिता है।
- यह तथ्य कि मसीह मेरा सिफारिश करने वाला है। वह मेरी निर्बलताओं को जानता है और जीवन में हर हालात में मुझे मज़बूत करने के लिए अपनी सामर्थ देने के लिए वह पिता से वनती करता है।

आप इसमें और भी बातें जोड़ सकते हैं। किसी ने कहा है, ''शांति का अर्थ परेशानी का न होना नहीं बल्कि प्रभु की उपस्थिति है''!

दूसरों से सम्बन्धित (4:5)

यदि हम ''आनन्दित'' होने की ताड़ना को मान लें तो ''प्रभु में'' हमारा आनन्द केवल हमारे मनों में ही नहीं होगा बल्कि यह हमारे आस पास के लोगों को भी दिखाई देगा। पौलुस की अगली आज्ञा का सम्बन्ध इस बात से है कि हम दूसरों से कैसे जुड़ते हैं: *''तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों पर प्रगट हो''* (आयत 5क)।

अनुवादित शब्द ''कोमलता'' *epieikps* सचमुच में उन बड़े यूनानी शब्दो में से एक है[5] इस

शब्द को कई शब्दों के साथ व्यक्त किया गया है, जैसे ''संयम'' (KJV) और ''धैर्य'' (ASV; RSV)। याकूब 3:17 में इसका अनुवाद ''कोमल'' हुआ है, सो कई अनुवादों में ''कोमलता'' का विचार पाया जाता है (NIV; CEV ASV में मार्जन नोट्स) ''कोमल व्यवहार'' (TEV), ''कोमल और दयालु'' (NCV), ''न्यायसंगत और कोमल'' (CJB)। *Peieikes* एक मिश्रित शब्द है जो ''पर'' (epi) के अर्थ वाले उपसर्ग के साथ ''न्यासंगत होने'' (eikos) के पूर्व सर्ग को मिलाता है। गैरल्ड हॉथोर्न ने सुझाव दिया है कि यह ''सदा-श्यता'' या 'मधुर समझदारी' के सकारात्मक विचारों को दर्शाता है।''[16] 2 कुरिन्थियों 10:1 में इस शब्द का इस्तेमाल यीशु का वर्णन करने के लिए किया गया है। मुझे रिचर्ड गफिन द्वारा इसके अर्थ का ढंग पसन्द है: ''दूसरों के लिए मसीह जैसा विचार।''[17] *epieikes* से कई सुझाव मिलते हैं।

- मधुर स्वभाव ...
- जो अपने मर्जी करवाने की ज़िद न करे (देखें 1 कुरिन्थियों 13:4-7)
- जिससे तर्क किया जा सके (तर्कहीन नहीं)।

ऐसा स्वभाव 4:2 में पौलुस द्वारा सम्बोधित दोनों बहनों को मिलाने के लिए सहायक रहा होगा। भाइचारे के सम्बन्धों में हमें न केवल इस गुण की आवश्यकता है बल्कि हमें इसकी आवश्यकता *हर* सम्बन्ध में है। पौलुस ने कहा कि ऐसा व्यवहार ''*सब* मनुष्यों'' को पता हो ['देखा और पहचाना जाए'[18]]। संसार को यह देखने की आवश्यकता है कि हमारे स्वभाव का ''प्रभु में'' क्या आनन्द मिलता है!

ऐसा सकारात्मक बरताव रखना आसान बात नहीं है। पौलुस ने ''मधुर रूप में तर्कसंगत'' होने का यानी यह याद रखने का कि हम ''प्रभु में'' हैं मज़बूत कारण दे दिया था। अब उसने एक और कारण बताया कि ''प्रभु निकट है'' (आयत 5ख)। ''निकट'' शब्द (यू.: *eggus*) का अर्थ हो सकता है कि प्रभु बहुत दूर कभी नहीं हो (देखें मत्ती 28:20)। यह समझते हुए कि प्रभु उस सब को जो हम करते हैं देखता है (इब्रानियों 4:13) हमें बेहतर काम करने की प्रेरणा मिलती है। यह समझ कि वह हमारे पास ही है (इब्रानियों 13:5) हमें वहीं करने की सामर्थ देता है जो हमें करना चाहिए। परन्तु यहां ''निकट'' शब्द सम्भवतया इस तथ्य के सम्बन्ध में है कि यीशु का द्वितीय आगमन हमेशा पक्का है (देखें फिलिप्पियों 3:10, 11, 14, 20, 21)। यह समझ कि मसीह किसी भी समय आ सकता है हमें आनन्द से भरे वाली होने चाहिए (देखें प्रकाशितवाक्य 22:20)। यह किसी के लिए भी जैसा हमें सोचना और करना चाहिए वैसे ही करने के लिए ज़बर्दस्त प्रेरणा भी होनी चाहिए (देखें लूका 12:40; 1 यूहन्ना 3:3)!

चिन्ता से दूर रहना (4:6क)

पौलुस की अगली आज्ञा लगभग चौंकाने वाली है: *''किसी भी बात की चिन्ता मत करो''* (आयत 6क)। CEV में केवल यह लिखा गया है: ''किसी बात की चिन्ता न करो।'' चिन्ता न करो? एक मिनट रुकना! क्या चिन्ता जीवन के भाग के रूप में स्वीकार नहीं की गई? हम सब को अपने परिवारों, अपनी नौकरी, अपने स्वास्थ्य, उन असंख्य परेशान करने वाली बातों की चिन्ता करनी पड़ती है जो हमें प्रतिदिन सताते हैं![19] बोब लाइनस ने कहा है कि केवल तीन तरह

के लोग हैं: वे जिन्हें परेशानी है, वे जिन्हें परेशानी थी और वे जो परेशान होने वाले हैं।[10] यह सही है तो निश्चित रूप में पौलुस के कहने का यह अर्थ नहीं था कि हम चिन्ता न करें! आइए इस आयत को फिर से देखते हैं। हां इसमें तो यह लिखा है कि ''किसी भी बात की चिन्ता मत करो।''

पौलुस ने फिलिप्पियों को चिन्ता न करने की आज्ञा क्यों दी? क्या उसे उनकी परेशानियां हलकी लगी? नहीं, वह उन्हें केवल इतना बताना चहाता था कि उनकी समस्याएं चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हों, परमेश्वर उन समस्याओं से बड़ा है। चिन्ता पाप है क्योंकि यह हमारी कठिनाइयों का सामना करने और जीवन की किसी भी मुसीबत से बच निकलने में सहायता के लिए पिता में भरोसे की कमी का संकेत है (देखें मत्ती 6:25-33)।

अनुवादित शब्द ''चिन्ता'' (*merimano* का एक रूप) का मूल अर्थ ''परवाह करना'' है।[11] इस यूनानी शब्द का इस्तेमाल कई बार सकारात्मक रूप में होता है (देखें फिलिप्पियों 2:20) परन्तु आम तौर पर इसका नकारात्मक अर्थ है। यीशु ने इस शब्द का इस्तेमाल तब किया जब उसने कहा ''सो कल के लिए चिन्ता न करो'' (मत्ती 6:34)। पौलुस ने इस शब्द के संज्ञा रूप का इस्तेमाल किया जब उसने लिखा, ''अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो'' (1 पतरस 5:7)। *Merimnao* का सम्बन्ध सम्भवतया *merizo* से है जिसका अर्थ है ''विभिन्न दिशाओं में [खींचना]।''[12] चिन्तित मन कभी इधर और कभी उधर खींचा जाता है और आशा द्वारा इसे एक और खींचा जाता है और भय इसे दूसरी ओर खींचता है। आम तौर पर परिणाम निराशा और असहायपन की भावना होता है। मैंने इस भावना का अनुभव किया। आपने भी किया होगा।

सहायता के लिए विनती करना (4:6ख)

हम चिन्ता न करें न करें तो क्या करें? आयत 6 के अन्तिम भाग का आरम्भ ''परन्तु'' के साथ होता है। अन्य शब्दों में, ''चिन्ता करने के बजाय, *यह* करो।'' क्या करो? *''परन्तु हर बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं'' (आयत 6ख)।* चिन्ता के लिए पौलुस का **प्रतिवर्ष** प्रार्थना था (और है)। जे. ए. बैंगल ने कहा है, ''परवाह और प्रार्थना का ... आग और पानी से कहीं अधिक।''[13] हम इसमें जोड़ सकते हैं ''ज्योति और अंधकार से,'' ''ठण्डे और गर्म से।''

चिन्ता के लिए ''क्विक फिक्स'' देना पौलुस का उद्देश्य नहीं था। मैक्सी डनम ने लिखा है कि प्रेरित की ''प्रार्थना की पेशकश आसान हल नहीं है,'' यानी प्रेरित के मन में ''सोने के समय या प्रात: उठने के समय दोहराए जाने वाले शब्द'' नहीं थे ''जिसे हम ने प्रार्थना का नाम दिया है।'' इसके बजाय उसने कहा:

> [पौलुस] हमारे जीवनों को परमेश्वर के सामने लाने, परमेश्वर पर हमारी निर्भरता की जांच करने, परमेश्वर के हाथों में हमारे जीवन देने के गम्भीर कार्य की बात कर रहा है। ... चिन्ता वर्तमान और भविष्य के बोझ को स्वयं ले जाने का प्रयास है जबकि प्रार्थना इसे परमेश्वर के सुरक्षित हाथों में देना और छोड़ना है।[14]

कुछ पल पहले की गई तुलनाओं में वापस आते हैं। जब पानी का आग पर डाला जाता है, तो आग बुझ जाती है। जब प्रकाश निकलता है तो अंधियारा छिप जाता है। जब किसी चीज़ को

गर्म किया जाता है तो उसका ठण्डापन खत्म हो जाता है। इसी प्रकार जब हम अपनी समस्याओं को परमेश्वर के पास ले जाते और उसके अनुग्रह में भरोसा, सचमुच में भरोसा करते हैं तो चिन्ता बिखर जाती है।

आयत 6 को और निकट से देखने से हमारे मनों में इस नियम को समझने में सहायता मिलेगी। जॉन वाल वुर्ड ने इस आयत को ''बाइबल में प्रार्थनाओं की बड़ी ताड़नाओं में से एक'' कहा है।[15] मार्टिन ने इस आयत को कहा है कि यह ''वह है जिसके पास मसीही लोग अगुआई के लिए आते हैं और जिससे उन्हें हर युग में प्रोत्साहन और आशीष मिली है।''[16]

प्रार्थना के लिए पौलुस द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्दों को देखने से पहले, ''अपने मन में'' हर बात में'' शब्द वाक्यांश को रेखांकित कर लें: ''परन्तु *हर एक बात* में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं'' (आयत 6ख)। ''हर बात में'' हर शब्द के साथ मिलता है।

पहले तो ''प्रार्थना'' के लिए सामान्य शब्द है: ''किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर बात में तुम्हारे ... *प्रार्थना* के द्वारा ...'' यूनानी शब्द (*proscuche*) ''को'' या ''के प्रति'' (pros) के अर्थ वाले उपसर्ग के साथ पूर्वसर्ग है। इस का सम्बन्ध ''के प्रति प्रार्थना'' यानी जो भी हो हमें इसे प्रार्थना में इसे इस प्रकार ले जाना आवश्यक है। पहले हमने आयत 6 के पहले भाग के CEV के अनुवाद को देखें। अब यहां उस अनुवाद से बढ़कर है: ''किसी भी बात की चिन्ता न करो, पर हर बात की प्रार्थना करो।''

पौलुस ने फिर ''निवेदन'' शब्द का इस्तेमाल किया: ''हर एक बात में *निवेदन,* प्रार्थना ... के द्वारा किए जाएं।'' ''निवेदन'' (यू.: *deesei*) एक विशेष प्रकार की प्रार्थना है। जैसा कि अनुवादित शब्द से संकेत मिलता है कि इसमें परमेश्वर से कुछ मांगना शामिल है। क्या? ''हर एक बात'' शब्द को याद रखें। चार्ल्स अर्डमैन ने लिखा है, ''परमेश्वर की सामर्थ के लिए कोई भी बात बहुत बड़ी नहीं है, कोई [इतनी] छोटी नहीं [कि यह] उसकी परवाह से ऊपर हो।''[17]

''निवेदन'' शब्द के साथ नज़दीकी से जुड़ा हुआ शब्द है ''विनती:'' हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा परमेश्वर के सनमुख उपस्थित किए जाएं। ''विनती'' के लिए यूनानी शब्द ''विवेदन'' शब्द है। पक्की और संक्षिप्त याचनाओं का संकेत देते हैं। हमारा निवेदन सामान्य नहीं बल्कि स्पष्ट होना चाहिए; हमारी प्रार्थनाएं केन्द्रित होनी चाहिएं। कई ऐसी विनतियां हैं, जो हम कर सकते हैं।[18] हम अपने लिए विनतियां कर सकते हैं। विलियम बार्कले ने सुझाव दिया, हम *कालांतर* के लिए क्षमा के लिए, *वर्तमान* में अपनी आवश्यक बातों के लिए, *भविष्य* के लिए सहायता और अगुआई के लिए प्रार्थना कर सकते हैं।''[19] हम दूसरों के लिए भी विनती कर सकते हैं जिसे सिफ़ारिश कहा जाता है (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 5:25; 2 थिस्सलुनीकियों 1:11; याकूब 5:16)। ध्यान दें कि शब्द ''विनती'' है न कि ''मांग।''[20] हर विनती की योग्यता होनी आवश्यक है: ''... मेरी नहीं बल्कि तेरी इच्छा पूरी हो'' (देखें लूका 22:42)।

एक सवाल उठ सकता है: ''हमें अपनी विनती 'परमेश्वर के समुख उपस्थिति' क्यों करनी चाहिए? क्या उसे पहले से मालूम नहीं है कि उसे क्या चाहिए और हमारी क्या आवश्यक है?'' हां उसे मालूम है पर वह फिर भी चाहता है कि हम मांगे (मत्ती 7:7, 8)। कॉफ़मैन ने

एक उपयुक्त विचार जोड़ा है: जब तक हम *मांगते* नहीं तब तक हमारी *आवश्यकताएं* तो हैं पर *विनतियां* हैं।[21]

पौलुस द्वारा इस्तेमाल किया गया चौथा शब्द ''धन्यवाद'' है। ''... हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा *धन्यवाद* के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं।'' यूनानी का अनुवादित शब्द ''धन्यवाद'' eucharistia का एक रूप ''निशुल्क देना'' (*charizomai*) के अर्थ वाले शब्द के साथ ''अच्छा'' (eu) के लिए पूर्व सर्ग को मिलाता है। यह कृतज्ञ मन से उमड़े स्वेच्छा से किए गए धन्यवाद का संकेत देता है। प्रार्थनाएं केवल ''इच्छाओं की सूची'' नहीं बल्कि धन्यवाद के साथ तर होनी चाहिए।

आयत 6 पूर्णताओं के साथ भरी है: किसी भी बात की चिन्ता न करो; हर बात के लिए प्रार्थना करो; हर बात के लिए धन्यवाद दो[22]! ''जोए बारनेट ने ... परमेश्वर को हर चीज़ के लिए धन्यवाद दो''[23] शीर्षक से एक प्रवचन दिया है। इसमें उन्होंने कौरी टैन बुम की बात बताई जिसे नज़रबंदी शीवर में भेजा गया। सैकडों स्त्रियों को छोटी छोटी बैरकों में ठूसा गया था। इमारत बहुत गंदी और बदबूदार थी पर इससे भी गंदा रात दिन उन पर हमला करने वाले पिस्सु थे। बैरकों में बाइबल पर चर्चा के दौरान, फिलिप्पियों 4:6 दोहराया गया। स्त्रियों को समझ नहीं आ रहा था कि वे पिस्सुओं के लिए धन्यवाद कैसे दे सकती हैं। उन्हें पिस्सुओं में कोई छुड़ाने वाली बात दिखाई नहीं दी, पर फिर भी उन्होंने उनके लिए परमेश्वर का धन्यवाद दिया। बाद में उन्हें पता चला कि पुरुष गार्ड अन्य बैरकों में स्त्रियों के साथ बतमीज़ी करते रहते हैं पर उनकी बिल्डिंग में उन पिस्सुओं के कारण नहीं आते थे।

हम सब के जीवनों में पिस्सु होते हैं जो धन्यवाद करना कठिन बना देते हैं, पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम उस परमेश्वर की आराधना करते हैं जो ''सब बातों को मिलाकर भलाई ही को उत्पन्न कराता है अर्थात उन्हीं के लिए जो [उससे] प्रेम करते हैं'' (रोमियों 8:28)। ''हर बात में'' धन्यवाद देना सीखना न केवल कृत्तज्ञता दिखाने के लिए बल्कि अधीनता दिखाने के लिए भी है। एक अर्थ में हम यह कह रहे होते हैं, ''मेरे जीवन में चाहे जो कुछ भी हो जाए, मैं इसमें परमेश्वर का हाथ देखने की कोशिश करूंगा और उसी को महिमा दूंगा।''

हमें कुछ सकारात्मक आशिषें भी मिली हैं। आपको चाहिए कि रुककर उन आशिषों की सूची बनाएं। सूची में सबसे ऊपर आपकी आत्मिक आशिषें हैं। आपकी जवानी, आपकी सेहत, आपकी सम्पत्ति, आपके मित्रों, आपके परिवार को छीन सकता है पर ''आपको'' [मसीह के प्रेम से] अलग कोई बात नही कर सकती'' (रोमियों 8:35)!

परिणाम-शांति (4:7)

अब हम एक अद्भुत, लगभग अविश्वसनीय प्रतिज्ञा पर आते हैं: *''तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ के बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी'' (आयत 7)।* ''तब'' शब्द को नज़रअन्दाज़ करके आगे न बड़ें। आयत 7 की प्रतिज्ञा 4 से 6 आयतों से जुड़ी हुई है: *यदि* आप सदा आनन्दित रहते हैं; *यदि* आप मधुर तर्क को दिखाते रहते हैं; *यदि* चिन्ता करने के बजाय आप प्रार्थना करते हैं; *तब आपको* ''परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है'' मिलेगी।

''परमेश्वर की शान्ति'' वह शान्ति है जो परमेश्वर देता है, जिसे केवल वही दे *सकता* है क्योंकि वह ''शान्ति का परमेश्वर'' है (आयत 9)। ''सारी समझ से परे है'' का अनुवाद यूनानी वाक्यांश *huperechousa* (''ऊपर होना [या रखना]'') *panta* (''सब'' या ''हर'') *noun*[24] (''मन'' या ''सोच'') का अनुवाद है। इसक अर्थ मूलतया ''हर मन के ऊपर'' या ''हर सोच के ऊपर'' है। यह शब्द इस तथ्य का अर्थ दे सकता है कि मानवीय मन उस शान्ति को उत्तम करने के योग्य है जिसे केवल परमेश्वर दे सकता है। शायद इससे आसान अर्थ होना चाहिए कि परमेश्वर की शान्ति इतनी अद्‌भुत, इतनी आश्चर्यजनक है कि इसे सीमित मनों द्वारा समझ पाने का कोई ढंग नहीं है। विभिन्न अनुवादों में इन स्पष्ट करते वाक्यांशों का इस्तेमाल हुआ है:

- NCV: ''इतनी बड़ी कि हम इसे समझ नहीं सकते।''
- फिलिप्स: ''मानवीय समझ से ऊपर।''
- LB: ''मानवीय मन की समझ से कहीं अधिक अद्‌भुत।''

ऐसी शान्ति रखने वाले लाग पूरी तरह से नहीं बता सकते कि इस शान्ति का क्या अर्थ है और जिनके पास नहीं है उन्हें समझ नहीं आ सकता कि मसीही लोगों को वही समस्याएं होने के बावजूद जो उन्हें हैं शान्ति कैसे मिलती है।

> हैर्लड बोसले ने 1930 की आरम्भ की बड़ी मंदी के दिनों की एक कहानी याद दिलाई। विख्यात अटारनी और तथा कथित नास्तिक क्लेरिंस डैरो सहित वक्ताओं का एक पैनल शिकागो के दक्षिण से आए लोगों की एक सभा को सम्बोधित कर रहे थे जिनमें अधिकतर काले लोग थे। आर्थिक स्थिति बहुत बेकार थी; धन और नौकरियों की कमी थी और डैरो ने काले लोगों की दुर्दशा की बात उठाने के लिए इसी तथ्य का इस्तेमाल किया। उसने उनकी परेशानियों की समीक्षा यह कहते हुए की, ''और आप तब भी गाते? कोई आपकी तरह गा नहीं सकता! गाने के लिए आपके पास क्या है?'' बिजली की फुर्ती से मण्डली में से एक स्त्री पुकारने लगी, ''गाने के लिए हमारे पास यीशु है!'' और उसके जवाब के बाद कई लोगों ने ''आमीन'' और ''हां हां'' कहा। ...
>
> स्वभाव के विपरीत एक बार तो डैरो के पास कोई जवाब नहीं था क्योंकि उसका सामना उससे था जिसकी तर्कसंगत व्याख्या नहीं हो सकती थी, जिसे मानवी शब्दों में ब्यान भी नहीं किया जा सकता था-कि लोग आंसुओं के बीच और अपने भय से ऊपर भी गा सकते थे क्योंकि वे उसके साथ चलते हैं जो उन्हें सब काम करने की सामर्थ देता है [फिलिप्पियों 4:13]।[25]

मसीही के प्रेम की तरह परमेश्वर के विश्वासी और भरोसा रखने वाले बालक के पास ''ज्ञान से परे'' की शान्ति है (इफिसियों 3:19)।

पौलुस ने फिलिप्पियों को बताया कि यह शान्ति जिसकी व्याख्या नहीं की जा सकती ''तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी'' (आयत 7ख, ग)। यूनानी शब्द (*phroureo*) का अनुवाद ''सुरक्षित छावनी के साथ रहने की तरह सुरक्षा में, रक्षा करके रखने के लिए सैनिक शब्द'' है। ... ''इसका इस्तेमाल मसीही लोगों की सुरक्षा, ... और सुरक्षा

के बोद्ध के लिए किया जाता है, जो उसे सब बातों को परमेश्वर के हाथ सौंप देने पर मिलती है।''[26] पूरी तरह से सुरक्षित ''चार-दीवारी वाले नगर की कल्पना करें।'' फिर अपना कामकाज करते हुए यह जानने के कारण वह *सुरक्षित* है उसके अन्दर रहने वाले व्यक्ति की कल्पना करें। ''रक्षा'' के अर्थ वाले शब्द का यही रूपक है।

परन्तु ध्यान दें कि सुरक्षा *किसकी* होती है: ''तुम्हारे हृदयों और मनों'' की। ''हृदय'' और ''मन'' मसीही व्यक्ति के सम्पूर्ण भीतरी व्यक्तित्व का वर्णन करता है। किसी पद्य में मिलने से शब्द का ज़ोर भावनाओं पर होता है, जबकि मन का जोर विचारों पर। सुरक्षा भीतरी मनुष्य की होती है न कि *बाहरी* मनुष्य होती है। इस अध्ययन में शांति के लिए एक अधिकतर लोगों को समझ नहीं आता कि वास्तव में शांति है क्या? बहुत से लोग चाहते हैं कि परमेश्वर बाहरी मनुष्य की रक्षा करे। वे शान्त परिस्थतियों से गिरे रहना पसन्द करते हैं। प्रभु ने कभी यह प्रतिज्ञा नहीं की कि उसके लोगों पर तुफ़ान, बीमारी और प्रकोप नहीं आएंगे। उसने प्रतिज्ञा की है कि वह हमारे हृदयों और मनों की रक्षा करेगा, हमारे शरीरों के साथ कुछ होने के बावजूद। इसलिए अपने ''बाहरी मनुष्यत्व'' के ''नष्ट होते जाते'' के बावजूद पौलुस के पास शान्ति थी क्योंकि उसका ''भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता'' था (2 कुरिन्थियों 4:16)!

एक बार फिर मैं यह ज़ोर देना चाहता हूं कि हमारा वचन पाठ इस बचाव की प्रतिज्ञा केवल उन्हीं के साथ करता है जो ''मसीह यीशु में'' हैं (आयत 7ग) यानी यदि हम ने उस ''में बपतिस्मा'' नहीं लिया है (रोमियों 6:3), और यदि हम उस में जल (जी) नहीं रहे हैं (देखें कुलुस्सियों 2:6), तो हमें सुरक्षा देने की उसकी कोई प्रतिज्ञा नहीं। जॉन नाइट ने लिखा है, ''हम परमेश्वर के शान्ति और सुरक्षा के दान का आनन्द तभी लेते हैं जब हम उसके आज्ञापालन के द्वारा उसके अधिकार को मानते हैं।''[27]

सारांश

शान्ति-हम इसे चाहते हैं, पर क्या हमें इसकी इतनी इच्छा है कि हम इसे पाने के लिए जो भी आवश्यक हो करने को तैयार हैं? इंग्लैंड के पूर्व प्रधानमत्री जेम्स रामसे मैक्डोनल्ड स्थाई शान्ति की सम्भावना पर किसी अन्य सरकारी अधिकारी से बात कर रहे थे। सरकारी अधिकारी को लगा कि मैक्डोनल्ड महोदय की बातें भोली हैं। उसने कहा, ''शान्ति की इच्छा करना आवश्यक नहीं कि शान्ति देह ही दे।'' मैक्डोनल्ड महोदय ने कहा, ''बिल्कुल सही। न ही खाने की इच्छा करना आपकी भूख को मिटाता है, पर कम से कम भोजनालय की ओर जाने के लिए कदम तो उठाना पड़ेगा।''[28] यदि हमें इतनी शिद्दत से शान्ति की इच्छा है तो हमें जो कुछ इसे पाने के लिए आवश्यक होता तो उसे करने के लिए कदम अवश्य उठाएंगे।

- प्रभु में आनन्दित होना
- दूसरों से सम्बन्धित
- चिन्ता से दूर रहना
- सहायता के लिए विनती करना

यदि हम पौलुस के निर्देषों का पालन करें तो हमें अपेक्षित परिणाम मिल जाएगा: ''परमेश्वर

की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, [हमारे] हृदय और [विचारों को] मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी!''

टिप्पणियां

[1]जहां आप रहते हैं वहां की आवश्यकता के अनुसार इस पद्य को लेकर विस्तार दे सकते हैं। [2]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्पोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 96. जॉन एफ़. वालवूर्ड, *फिलिपियंस, ट्रायंफ्ड क्राइस्ट,* एवरीमैन'स बाइबल कमैंट्री (शिकागो: मूडी प्रैस, 1971), 100. [3]जीवन में विभिन्नताओं और उन बातों की जिन पर हमारा कोई वश नहीं है, सूची एवन मेलोन, *प्रैस टू द प्राइज़* (नैशविल्ले: टंवट्यिथ सेंचुरी क्रिश्चियन, 1991), 104 में ई गई। [4]टूमुन स्प्रिंग की *पावर फ़ॉर टुडे* (जून 1956): 40 के डिवोशनल से लिया गया। [5]गेरल्ड एफ़. हॉथोर्न, *वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री,* अंक 43, *फिलिपियंस,* संपा. डेविड ए. हब्बर्ड एंड ग्लेन डब्ल्यू. बार्कर (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1983), 182. [6]वही। [7]रिचर्ड बी. गफिन, नोट्स ऑन फिलिपियंस, *दि NIV स्टडी बाइबल,* संपा. केन्नथ बार्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 1808. [8]हॉथोर्न, 182. अनुवादित शब्द ''... पर प्रगट हो'' यूनानी भाषा के शब्द *gnostheto* से लिया गया है। [9]जहां आप रहते हैं इसे उससे और मेल खाता बनाएं। ध्यान दें कि इस पद्य में व्यंग्य है। इस व्यग्य को अक्षरश: न लिया जाए। [10]जुड्सोनयिा चर्च आफ़ क्राइस्ट, जुड्सोनिया, आरकैंसा में बॉब लियोंस द्वारा 16 फरवरी 2003 को दिया गया संदेश, ''गॉड'स सर्वाइवल किट।''

[11]KJV में ''केयरफुल'' बिल्कुल सही अनुवाद है, परन्तु आज हम ''केयरफुल'' शब्द का इस्तेमाल उसी अर्थ में नहीं करते जिसमें राजा जेम्स के समय में किया जाता था। उस समय इसका अर्थ ''ध्यान से भरा'' था जबकि अब इसका अर्थ ''सुरक्षित रहने के लिए ध्यान रखना'' है। KJV में ''केयरफुल'' है, जिस कारण कई टीकाओं में यह लिखा गया है कि पौलुस ''उपयुक्त देखभाल'' को गलत नहीं ठहरा रहा था पर ''आत्म-कन्द्रित प्रतिप्रभावित चिन्ता'' (देखें ग्रिफिन, 1808)। [12]डब्ल्यू. ई. वाइन, *दि एक्सपेंडिड वाइन'स एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स,* संपा. जॉन आर. कोहेलन्बर्गर 3 (मिनियापोलिस: बेथनी हाउस पब्लिशर्स, 1984), 160. [13]जॉन ए. नाइट, *बीकन बाइबल एक्सपोज़िशंस,* अंक. 9, *फिलिपियंस, कोलोशियंस, फिलेमोन* (कैंसास सिटी, मिजोरी: बीकन हिल प्रैस, 1985), 114 में उद्धृत। [14]मैक्सी डी. डन्नम, *गलेशियंस, इफिशियंस, फिलिपियंस, कोलोशियंस, फिलेमोन,* दि कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़, सम्पा. लायड जे. ओगल्वी (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1982), 313-14. [15]वालवूर्ड, 106. [16]राल्फ़ पी. मार्टिन, *दि एपिस्टल ऑफ़ पॉल टू द फिलिपियंस,* संशो. संस्क., टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़, संपा. आर. वी. जी. टास्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 171. [17]चार्ल्स आर. अर्डमैन, द *एपिस्टल ऑफ़ पॉल टु द फिलिपियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1983), 141. [18]तीन विनतियां हैं जो हमें करने की मनाही है (उदाहरण के लिए देखें याकूब 4:3)। कॉफ़मैन ने जायज़ विनतियों की एक सूची बताई है (जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन गलेशियंस, इफिशियंस, फिलिपियंस एंड कोलोशियंस* [ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1977], 321-22). [19]विलियम बार्कले, *दि लैटर्स टू द फिलिपियंस, कोलोशियंस एंड थेस्सलोनियंस,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 77. [20]लियोन बार्नस, *दैट यू मेय नोअ क्राइस्ट: स्टडीज़ फ्रॉम फिलिपयंस* (सरसी, आरकैंसा: रिसोर्स पब्लिशर्स, 1992), 149.

[21]कॉफ़मैन, 321. [22]कठोर शब्दों में कहें तो यह आयत ''हर बात *में* '' कहती है न कि हर बात के लिए।'' जब आप किसीबात के लिए धन्यवाद नहीं दे सकते तब भी आम तौर पर उस परिस्थिति *में* कुछ ऐसा होता है जिसके लिए आप धन्यवाद दे सकते हैं। किसी भी परिस्थिति में धन्यवाद देने के ढंग पर कॉफिन, 320 में अच्छा भाग है। [23]जोअ आर. बार्नेट, *लिव! विद पीस पावर एंड पर्पज़,* द ट्वंटियथ सेंचुरी सर्मन्स सीरीज़, अंक 11 (अबिलेन, टैक्सस: बिब्लिकल रिसोर्स प्रैस, 1978), 64-70. पिस्सुओं का उदाहरण पृष्ठ 66-68 पर है। [24]इसका उच्चारण है ''नून।'' [25]डन्नम, 320-21. [26]वाइन, 513. [27]नाइट, 115. ऐसी ही टिप्पणियां मार्टिन, 173 और हॉथोर्न, 185

में की गई हैं। [28]जेम्स एस. ह्यवट, संपा., *इलस्ट्रेशंस अनलिमिटेड* (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1988), 403 से लिया गया है।